सामर्थी बनाना
अधिवेशन 9

आग के द्वारा जांच

आग के द्वारा जांच

यह ऐसी शिक्षा है जिसे हम सुनना पसन्द नहीं करेंगें।

जब हम पहली बार प्रभु के पास आते हैं और वह हमें पवित्रआत्मा से भर देता है, तब अकसर ऐसा होता है कि वह हमें सब समस्याओं और चिन्ताओ से ऊपर उठा देता है। हरेक चीज बड़ी सिद्ध लगती है, परमेश्वर आत्मिक ऊंचाईयों को हममें अपना राज्य स्थापित करने के लिए इस्तेमाल करता है।

परन्तु यदि आप उसके साथ कुछ समय चलें हैं, तो आप यह जानते हैं कि हम पहाड़ी की चोटी अर्थात् आत्मिक ऊंचाई पर हमेशा नहीं खड़े रहते हैं।

- कुछ नकारात्मक घट जाता है; हम थोड़ा सा नीचे आ जाते हैं।
- सताव आ जाता है, हम थोड़ा सा और नीचे आ जाते हैं
- कोई हमे निराश कर देता है और हम बहुत जल्दी ही बिल्कुल नीचे भूमि पर खडे होते हैं।

हम आत्मिक ऊंचाईयों के बादलों पर हर समय नहीं बने रह सकते इसलिए परमेश्वर आत्मिक जांचों, सताव और दुसरी बातों को हमारे जीवन में ले आता हैं। इसे हम ''आग की जांच'' कहते हैं।

यीशु ने पवित्रशास्त्र में कहा, ''जो विजय पाए उसे मैं जीवन का मुकुट दुंगा।'' आप विजय नहीं पा सकते यदि आप किसी चीज में से होकर न जाए।

परमेश्वर हमारे समर्पण की भी जांच करना चाहता है। वह आग की जाच को इसके लिए हमारे जीवन मे ले आता है कि वह इसका सत्यापन करे और यह भी कि हम उसके प्रति भलाई या बुराई मे सें, कैसे भी हालात क्यों न हों, कितने समर्पित हैं।

यीशु ने कहा, ''इस संसार में तुम पर बहुत से सताव हैं, परन्तु आनन्दित हो जाओ क्योंकि मैने संसार को जीत लिया है''।

उसने अपने चेलों से कहा कि जगत उनके साथ वैसे ही व्यवहार करेगा जैसा उसने उसके साथ किया है।

अकसर हम पाते हैं कि हमारे चारों तरफ कुछ लोग — हमारे परिवारों में से, हमारे मित्रों मे से, हमारे काम पर या हमारे स्कुल में परिचितो में से — हमारी आत्मिकता के बारे में जो कुछ घट रहा है उससे खुश नहीं हैं। वे हमारा मजाक उड़ा सकते हैं, वे हमें कठिन समय दे सकते हैं, और मसीह में हमारे नए जीवन से अपना सम्बन्ध तोड सकते है। कुछ हमारी नई जीवन शैली से कायल हैं और उनका प्रतिवादक तंत्र हम पर हमला बोलना है। अन्य हम पर दबाव डालने की कोशिश करेगे कि हम वापस अपने पूर्वजो के धर्म में आ जाए ।

यह हमेशा से होता आया है। हमे इस बात को जान लेना है कि कुछ न कुछ तो हलचल होगी ही।

आपकी प्रशिक्षण पुस्तिका में प्रेरित 14:22 में, पौलुस और बरनबास ने आरम्भिक कलीसिया को चेतावनी दी थी, कि ''उन्हे बहुत सी मुशिकलों (कठिनाईयां और सताव) में से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा। परमेश्वर के साथ अनुभव में ये उनका हिस्सा होगा।

आग के द्वारा जांच

''पौलुस और बरनबास चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो और यह कहते थे कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा'' — प्रेरित 14::22

जब हम पवित्र आत्मा से भरने के लिए प्रार्थना करते, हमें आशा नहीं करना चाहिए कि हमारी सारी समस्यांऐ पिघल जाएगी, बल्कि परिक्षाओं और जांच के समय की आशा करें। ये मसीही जीवन का आवश्यक भाग है। हमारा कार्य अभी भी पूरा नहीं हुआ है। इसमे ''आग के द्वारा जांच'' होनी बाकी है।

उदाहरण : आग द्वारा बपतिस्मा

जैसे ही यीशु आपको पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देता है, तो आपके जीवन में वास्तविक सामर्थ आरम्भ होने लगती है। जैसे ही आप परमेश्वर की आत्मा को अपने प्राणों और देह और इस ससांर में चारों ओर बहने देते हैं तो शैतान पीड़ित होकर आपके विषय में जान जाता हैं और आप इस बात को जान जाएगें! वह अपना पूरा ध्यान इस बात पर देगा कि यदि सम्भव हो तो आपको ''नीचे गिरा दे''।

शैतान तीन तरीके से हमें रोकने का प्रयास करता है :

1. **सामर्थ से हमें दूर रखने के द्वारा** .....
2. **हमारी गवाही पर हमला करने के द्वारा** .....

—यहून्ना 8:48
— लूका 7:34

3. **हमसे सामर्थ का गलत उपयोग करने के द्वारा** .....

यीशु का उदाहरण— लूका 4:1—13 '' हर तरीके से '' —इब्रनियों 4:15

'फिर यीशु पवित्रआत्मा से भरा हुआ यरदन से लौटा; और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा और शैतान उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ ना खाया और जब वे दिन पूरे हो गए तो उसे भूख लगी, और शैतान ने उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह कि रोटी बन जाए, यीशु ने उसे उत्तर दिया कि लिखा है, मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा, तब शैतान उसे ले गया और उसको पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए, और उससे कहा, मैं यह सब अधिकार और इनका वैभव तुझे दूंगा क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है और जिसे चाहता हूं उसी को दे देता हूं, इसलिए यदि तू मुझे प्रणाम करे तो ये सब तेरा हो जाएगा। यीशु ने उसे उत्तर दिया; लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर, तब उसने उसे यरूशलेम में ले जाकर मन्दिर के कंगुरे पर खड़ा किया और उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को यहां से नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतो को आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेगें कि तेरे पावं में पत्थर से ठेस न लगे, यीशु ने उसे उत्तर दिया, यह भी कहा गया है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना, जब शैतान सब परीक्षा कर चुका तब कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया''।

कई बार हम आग के द्वारा जांच में से होकर नही जाना चाहते। हमारा आरम्भ इतना अद्‌भुत और महिमामय होता है कि हम इस बात का अहसास नही करते कि, आग के द्वारा जांच भी मसीही जीवन का एक हिस्सा है।

अमेरिका के केप कानावर्ल में से उन्होंने उपग्रह को अन्तरिक्ष में भेजा, इसे भेजने से पहले उन्होनें इसके सारे यन्त्रों की जांच की कि वे काम कर रहे है या नहीं। उपग्रह पृथ्वी पर बड़े शिकंजों के सहारे खड़ा था। तब उन्होनें इंजन को आग लगाई जो उस उपग्रह को अपनी परिक्रमा में घुमाएगा। एक बार उन्होनें उपग्रह के सभी यन्त्रों का परिक्षण कर लिया तो वे जान गए कि अब इसे अन्तरिक्ष मे भेजना सुंरक्षित है।

यही तरीका हमारे साथ भी लागू होता है। अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका को देखें, जैसे ही यीशु आपको पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देता है, तो आपके जीवन में वास्तविक सामर्थ आरम्भ होने लगती है। जैसे ही आप परमेश्वर की आत्मा को अपने प्राणों और देह और इस ससांर में चारों ओर बहने देते हैं तो, शैतान पीड़ित होकर आपके विषय में जान जाता हैं और आप इस बात को जान जाएगें! वह अपना पूरा ध्यान इस बात पर देगा कि यदि सम्भव हो तो आपको ''नीचे गिरा दे'' यदि यह सम्भव है तो।

इस समय तक उसने आप पर कोई ध्यान न दिया हो। अभी तक आप उसके लिए धमकी नही थे। पर अब चूंकि परमेश्वर आपके जीवन मे काम कर रहा हैं वह आपको नीचे गिरा देने की कोशिश करेगा।

इसलिए अब हमारे पास यहां उपग्रह भेजने के लिए तैयार है। यदि इसे सफलतापूर्वक उड़ना है तो इसे उड़ने की सभी शर्तों के आधीन जांचा जाना जरूरी है। यहां आप बाहर जाने के लिए और पवित्रआत्मा की अगुवाई में जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार हैं और जैसा वह चाहता है वैसा ही करने के लिए। आप जानना चाहते हैं, परमेश्वर जानना चाहता है, और शैतान को जानने की जरूरत है...

- क्या आप इसको करने की योग्यता रखते हैं?
- जब आप पर दबाव पड़ता है तो क्या आप तब भी चलते रहेगे?
- जब बातें जैसा आप चाहते है वेसे नहीं हो रही हैं जैसा आपने सोचा तौभी क्या प्रभु आप पर दाव लगा सकता है।

इसलिए वह ''आग के द्वारा जांच'' आने देता है। और बहुत बार जैसे अय्यूब की घटना में सच है, वह शैतान को जांच के लिए हथियार के तौर पर प्रयोग करता है। (निसंदेह, शैतान को उसके दायरे में रखकर)

शैतान तीन तरीके से हमें रोकने का प्रयास करता है :

- सबसे पहले वह हमें **<u>सामर्थ से दूर रखेगा।</u>**
  - इससे पहले कि हम पवित्रआत्मा से सामर्थ प्राप्त करते, हममें से बहुतों के पास आत्मिक अन्धापन था। हमने पदों को पढ़ा परन्तु हमारी आँखें देखने के लिए खुली हुई नही थी या हम संदेश प्राप्त नहीं कर पाए।
  - शैतान कोशिश करेगा कि हम इस बात पर विश्वास करें कि सामर्थ ''आज के लिए नहीं है'', यह कि यह केवल आरम्भिक कलीसिया के लिए थी और हमें इसकी जरूरत नहीं और हमें इसे नहीं खोजना चाहिए।
  - यहां पर दो राज्यों के बीच में द्धंद्व नहीं होगा यदि हम सामर्थ को न स्वीकार करें।

आग के द्वारा जांच

''पौलुस और बरनबास चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो और यह कहते थे कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा'' — प्रेरित 14::22

जब हम पवित्र आत्मा से भरने के लिए प्रार्थना करते, हमें आशा नहीं करना चाहिए कि हमारी सारी समस्यांऐ पिघल जाएगी, बल्कि परिक्षाओं और जांच के समय की आशा करें। ये मसीही जीवन का आवश्यक भाग है। हमारा कार्य अभी भी पूरा नहीं हुआ है। इसमे ''आग के द्वारा जांच'' होनी बाकी है।

उदाहरण : आग द्वारा बपतिस्मा

जैसे ही यीशु आपको पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देता है, तो आपके जीवन में वास्तविक सामर्थ आरम्भ होने लगती है। जैसे ही आप परमेश्वर की आत्मा को अपने प्राणों और देह और इस ससांर में चारों ओर बहने देते हैं तो शैतान पीड़ित होकर आपके विषय में जान जाता हैं और आप इस बात को जान जाएगें! वह अपना पूरा ध्यान इस बात पर देगा कि यदि सम्भव हो तो आपको ''नीचे गिरा दे''।

शैतान तीन तरीके से हमें रोकने का प्रयास करता है :

1. **सामर्थ से हमें दूर रखने के द्वारा** .....

2. **हमारी गवाही पर हमला करने के द्वारा** .....

—यहून्ना 8:48
— लूका 7:34

3. **हमसे सामर्थ का गलत उपयोग करने के द्वारा** .....

यीशु का उदाहरण— लूका 4:1—13 '' हर तरीके से '' —इब्रनियों 4:15

'फिर यीशु पवित्रआत्मा से भरा हुआ यरदन से लौटा; और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा और शैतान उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ ना खाया और जब वे दिन पूरे हो गए तो उसे भूख लगी, और शैतान ने उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह कि रोटी बन जाए, यीशु ने उसे उत्तर दिया कि लिखा है, मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा, तब शैतान उसे ले गया और उसको पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए, और उससे कहा, मैं यह सब अधिकार और इनका वैभव तुझे दूंगा क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है और जिसे चाहता हूं उसी को दे देता हूं, इसलिए यदि तू मुझे प्रणाम करे तो ये सब तेरा हो जाएगा। यीशु ने उसे उत्तर दिया; लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर, तब उसने उसे यरूशलेम में ले जाकर मन्दिर के कंगुरे पर खड़ा किया और उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को यहां से नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतो को आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेगें कि तेरे पावं में पत्थर से ठेस न लगे, यीशु ने उसे उत्तर दिया, यह भी कहा गया है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना, जब शैतान सब परीक्षा कर चुका तब कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया''।

- दुसरी बात जिसकी वह कोशिश करेगा वह **<u>हमारी गवाही पर हमला</u>** करेगा।

  - हम देखते हैं कि उसने यह यीशु के जीवन में किया।
  - आप क्या सोचते हैं कि धार्मिक अगुवे यीशु की निन्दा क्यों कर रहे थे और उसे क्यों पियक्कड़ और पेटु लूका 7:34 में बुला रहे थे? आप क्या सोचते हैं कि क्यों वे यीशु पर दोष लगा रहे थे, कि उसे पापीयों और अधर्मियों के साथ टांग दिया जाए। वे उसकी निष्ठा पर हमला बोल रहे थे और उसकी प्रतिष्ठा को उजाड़ने की कोशिश कर रहे थे।
  - यहुन्ना 8:48 में हम पढ़ते हैं कि समय आ गया, जब उन्होंने वास्तव में यीशु पर शैतान की सामर्थ से चिन्ह और अदभुत काम करने का दोष लगा कर हमला बोला।
  - बहुत से रूढ़िवादी पास्टर पवित्रआत्मा से जब भर गए तब अपनी कलीसिया को पवित्रआत्मा के अभिषेंक और सामर्थ में अगुवाई करने लगें उन पर भी शैतानिक शक्तियो के द्वारा अगुवाई प्राप्त होने का दोष लगाया गया है।
  - एक घटना में, एक साम्प्रदाय के अगुवे इसी तरह के एक पास्टर से मिले और कई घण्टे कोशिश करते रहे कि वह सामर्थ के इस बहाव को छोड़ दे। आखिर तीन घण्टे के बाद, वे उसकी पत्नी की ओर मुड़े और कहा, ''मैडम, आपका जीवन अच्छा होता यदि आपने एक शराबी से विवाह किया होता।'' शत्रु यहां तक कि उन लोगो को इस्तेमाल करेगा जो आपको उत्साहित करेंगे कि आप अपनी गवाही और निष्ठा पर हमला करें।

- तीसरी बात जिसके द्वारा शत्रु हम नीचे गिराने की काशिश करेगा कि वह हमसे **<u>सामर्थ का गलत प्रयोग</u>** कराएगा।

  - दुर्भाग्य से यह वह क्षेत्र है जिसमे उसे सबसे जयादा सफलता मिलती है।
  - हममें से हरेक के पास घमण्ड और स्वार्थीपन की एक निश्चित मात्रा है। शैतान के काम करने का एक तरीका है — यीशु जिस बात को हमारे जीवन में डाल रहा हैं उस बात का उपयोग करके कि वह हमें ऐसे प्रयोग करे कि हम अन्य लोगो की नजरों में अच्छे नजर आए, या फिर अपने लिए चीजो को ले लें (भौतिक वस्तुऐं, प्रसिद्धी, प्रतिष्ठा आदि) तब उसने हमें सामर्थ के गलत उपयोग के लिए ले लिया है।
  - ऐसी भी शिक्षा है जो हमें परमेश्वर के रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करती है ताकि हम धनी बन जाए! यीशु ने पवित्रआत्मा की सामर्थ हमे इसलिए नही दी है। यीशु ने पवित्रआत्मा अपने लाभ के लिए, अपनी वस्तुओं के लिए और यहां तक कि अपनी प्रतिष्ठा के लिए कभी इस्तेमाल नहीं किया।
  - यीशु कभी भी ऐसी बात हमसे करने की आशा नही करता जो उसने स्वंय अनुभव न की हो। लूका 4:1—13 में हमें यीशु का उदाहरण मिलता है।
    - हम यीशु को दोहरा बपतिस्मा लेते हुए देखते हैं — पानी में और पवित्रआत्मा में।
    - इस अनुभव के बाद वह आत्मा की अगुवाई में जंगल मे गया ताकि 40 दिन शैतान उसकी परीक्षा ले — उसकी ''आग के द्वारा परीक्षा''
    - उसे शत्रु के विरोध में खड़े होना था।
  - एक विश्वासी जो पवित्रआत्मा की सामर्थ का अनुभव करता है, उसे उसके साथ के विश्वासी यह कहते हैं, कि वह अब तैयार है और, ''परमेश्वर के लिए बड़े कामों को'' कर सकता है। पथभ्रष्ट कर सकते है। इस प्रकार वह इसके बाद मे आने वाली बात के लिए बिल्कुल भी तैयार नही होता — शत्रु के साथ तीव्र मुकाबले की जंगल की एक यात्रा।

आग के द्वारा जांच

''पौलुस और बरनबास चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो और यह कहते थे कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा'' – प्रेरित 14::22

जब हम पवित्र आत्मा से भरने के लिए प्रार्थना करते, हमें आशा नहीं करना चाहिए कि हमारी सारी समस्यांऐ पिघल जाएगी, बल्कि परिक्षाओं और जांच के समय की आशा करें। ये मसीही जीवन का आवश्यक भाग है। हमारा कार्य अभी भी पूरा नहीं हुआ है। इसमे ''आग के द्वारा जांच'' होनी बाकी है।

उदाहरण : आग द्वारा बपतिस्मा

जैसे ही यीशु आपको पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देता है, तो आपके जीवन में वास्तविक सामर्थ आरम्भ होने लगती है। जैसे ही आप परमेश्वर की आत्मा को अपने प्राणों और देह और इस ससांर में चारों ओर बहने देते हैं तो शैतान पीड़ित होकर आपके विषय में जान जाता हैं और आप इस बात को जान जाएगें! वह अपना पूरा ध्यान इस बात पर देगा कि यदि सम्भव हो तो आपको ''नीचे गिरा दे''।

शैतान तीन तरीके से हमें रोकने का प्रयास करता है :

1. **सामर्थ से हमें दूर रखने के द्वारा** .....

2. **हमारी गवाही पर हमला करने के द्वारा** .....

—यहून्ना 8:48
— लूका 7:34

3. **हमसे सामर्थ का गलत उपयोग करने के द्वारा** .....

यीशु का उदाहरण— लूका 4:1—13 '' हर तरीके से '' —इब्रनियों 4:15

'फिर यीशु पवित्रआत्मा से भरा हुआ यरदन से लौटा; और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा और शैतान उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ ना खाया और जब वे दिन पूरे हो गए तो उसे भूख लगी, और शैतान ने उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह कि रोटी बन जाए, यीशु ने उसे उत्तर दिया कि लिखा है, मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा, तब शैतान उसे ले गया और उसको पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए, और उससे कहा, मैं यह सब अधिकार और इनका वैभव तुझे दूंगा क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है और जिसे चाहता हूं उसी को दे देता हूं, इसलिए यदि तू मुझे प्रणाम करे तो ये सब तेरा हो जाएगा। यीशु ने उसे उत्तर दिया; लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर, तब उसने उसे यरूशलेम में ले जाकर मन्दिर के कंगुरे पर खड़ा किया और उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को यहां से नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतो को आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेगें कि तेरे पावं में पत्थर से ठेस न लगे, यीशु ने उसे उत्तर दिया, यह भी कहा गया है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना, जब शैतान सब परीक्षा कर चुका तब कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया''।

- जिन बातों से शैतान ने यीशु की परीक्षा की उन्ही बातों से वह हमारी भी परीक्षा करेंगा।
- पहली परीक्षा उसकी **भूख** की संतुष्टि करना था।

    - यह परीक्षा हमारी शारिरीक इच्छाओं को पुरा करने की होती है। यीशु भुखा था; यीशु ने 40 दिन तक कुछ नही खाया था। चट्टाने रोटी के टुकड़ों के समान लग रही थी, शैतान ने उसे परीक्षा में डाला कि वह पत्थरों को रोटी में बदल दे, इस काम में गलत क्या था? पहला यह शैतान की ओर से आरम्भ हुआ काम था'; दुसरा परमेश्वर ने दुसरी योजनाएं बनाई थी। स्वर्गदूत इन्तजार कर रहे थे कि वे यीशु को उसकी परीक्षा खत्म होते ही उसे सेवा करने के लिए अपने पंखों पर उठा लें। उसे अपने हाथ में किसी वस्तु को नहीं लेना था। उसे उसके दिल में बढ़ रही इच्छा के लिए कोई प्रतिक्रिया नही करनी थी। इसलिए यीशु ने परमेश्वर के वचन का प्रयोग करते हुए परीक्षा का सामना किया।

- दूसरी परीक्षा यीशु के लिए उसकी अपनी सामर्थ के **प्रदर्शन** का तमाशा बनाना था।

    - इस कोशिश में परमेश्वर की सामर्थ को अपने घमण्ड से भरे हुए कारणों के लिए गलत प्रयोग करना था। शैतान यीशु को मंदिर के कंगूरे पर ले गया और उसे परिक्षा मे डालने के लिए पवित्रशास्त्र का प्रयोग किया ... ''...अपने आपको नीचे गिरा दे ताकि वह तेरे विषय अपने स्वर्गदुतो को आज्ञा देगा कि वे तुझे हाथों हाथ उठा लें ताकि तेरे पावं में पत्थर से ठेस न लगे'' पर कभी भी यीशु ने अपनी सेवकाई में अपनी तरफ ध्यान खींचने के लिए ''तमाशें से भरे हुए'' काम नहीं किए। उसने हमेशा स्वाभाविक तरीके से काम किया। वह इसलिए नाटक करने के लिए नही आया।

    - कुछ प्रचारक आज अपनी सेवकाई को नाटकीए तरीके से करते हैं, अकसर वे परमेश्वर के राज्य की बजाए अपनी ओर अधिक ध्यान खींच लेते हैं।

    - यीशु ने परमेश्वर के वचन से एक बार फिर शैतान का सामना किया, ये कहते हुए कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परिक्षा न करना।

1. उसकी **भूख** ..... (इच्छा) की संतुष्टी करने के द्वारा

2. ..... **प्रदर्शनी** ..... (धमण्ड) का तमाशा बनाकर

3. ..... **पीड़ामय** ..... (तर्कवाद) रास्तो से बचाव

''आग के द्वारा जांच की परिभाषा —

परमेश्वर के द्वारा अलग करने की प्रकिया जांच, कलेश, आर्थिक समस्या और सताव के द्वारा है, जिससे हम परिपक्वता मे आ जाऐं और हमें उसकी सेवा के लिए एक तरफ रख दे और उसकी पवित्रता के हिस्सेदार बना दे।

> *यहून्ना ने यह कहते हुए उत्तर दिया, ''मैं पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु मुझ से शक्तिशाली एक आनेवाला ह... वह तुम्हें आग और पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देगा''* — लूका 3:16

परमेश्वर का उद्धेश्य : रोमियों 8:28—29

और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं, क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हे पहले से ठहराया भी है कि उसे पुत्र के स्वरूप में हो ताकि वह बहुत भाईयों में पहलौठा ठहरे।

बस ..... **उद्धार** ..... ही नहीं, परन्तु ..... **पुत्रत्व** .....

(पद 29 ..... **भलाई** ..... है, पद 28 का)

हर एक विश्वासी के जीवन में परमेश्वर जांच की आग भेजता है, कि उनके प्रेम की गहराई और उस पर उनके विश्वास की सामर्थ की जांच हो सके। यदि वे जांच में सफल हो जाते हैं तो उनका विश्वास और गहरा हो जाता है और पुत्रों की नाई परिपक्व हो जाते हैं। वे सीखते हैं कि ये सब चीज़े मिलकर भलाई उत्पन्न करती हैं''।

''आग के द्वारा जांच'' में परमेश्वर का अभिप्राय

1. वह फटकता है ..... **(मती 3:12)** ..... लूका 22:31

''उसका सूप उसके हाथ में है और वह अपना खलिहान अन्य रीति से साफ करेगा और अपने गेहूं को तो खत्ते में इक्टठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं'' (मती 3:12)।

- अन्तिम तरीका जिसके द्वारा शैतान ने यीशु की परीक्षा की, वह पीड़ामयी **<u>रास्ते</u>** से बचाव की थी, वह रास्ता जिसे परमेश्वर ने चुना था; शैतान ने उसे वही परिणाम पाने के लिए दुसरे रास्ते पर ले जाने की कोशिश की।

    - यीशु पहले से ही जानता था कि वह रास्ता पीड़ामय होगा। जब क्रुस पर उसकी मृत्यु का समय आया, तो यीशु के शरीर के हरेक हिस्से पीड़ा और दर्द के विरोध में उठ खड़े हुए जिसे वह अनुभव कर रहा था। यह एक बड़ी ही वास्तविक परीक्षा थी शैतान ने यीशु को इस संसार के सभी तरह के राज्य दिखाए और उससे कहा कि इन सभी पर अधिकार पाने के लिए वह एक अलग रास्ते पर चले। उसे इसके लिए बस इतना ही करना था कि वह उसके सामने झुकता और उसकी आराधना करता। वह क्रुस और दर्द, सताव और शर्म से बच सकता था। मानवीए दिमाग के लिए यह एक बहत बड़ा आकर्षण है इसे आसानी से तर्क के साथ समझा जा सकता है, ''क्या यही एक रास्ता है? शायद मुझे अपने आपको इस रास्ते पर नहीं डालना चाहिए...''

    - परन्तु यीशु ने एक बार फिर परमेश्वर के वचन का प्रयोग करते हुए शैतान का विरोध किया।

    - हम भी शायद एक ''आसान'' रास्ते की परीक्षा में पड़ सकते हैं, एक अधिक ''अकलमन्द'' रास्ता, एक ऐसा रास्ता जिसमें मुशिकले और द्वंद्व, दर्द और सताव से बचा जा सकता है।

- एक बार जब परीक्षाऐ पूरी हो गई, स्वर्गदुत आए और सेवा करने लगे।

- जब यीशु ने परीक्षाओं का सामना किया तब उसने एक पुरूष के रूप मे किया जैसे कि हम करते हैं। उसके पास केवल अपनी ही इच्छा, उसके वचन की जानकारी, परमेश्वर की इच्छा के प्रति अपना समर्पण और पवित्रआत्मा की सामर्थ पर निर्भरता थी।

अब हम आग के द्वारा जांच की परिभाषा को जानने के लिए तैयार हो गए हैं। यह आपकी प्रशिक्षण पुस्तिका में है : ''परमेश्वर के द्वारा अलग करने की प्रकिया जांच, कलेश, आर्थिक समस्या और सताव के द्वारा है, जिससे हम परिपक्वता मे आ जाऐं और हमें उसकी सेवा के लिए एक तरफ रख दे और उसकी पवित्रता के हिस्सेदार बना दे।''

1. उसकी **भूख** ..... (इच्छा) की संतुष्टी करने के द्वारा

2. ..... **प्रदर्शनी** ..... (धमण्ड) का तमाशा बनाकर

3. ..... **पीड़ामय** ..... (तर्कवाद) रास्तो से बचाव

''आग के द्वारा जांच की परिभाषा —

परमेश्वर के द्वारा अलग करने की प्रकिया जांच, कलेश, आर्थिक समस्या और सताव के द्वारा है, जिससे हम परिपक्वता मे आ जाऐं और हमें उसकी सेवा के लिए एक तरफ रख दे और उसकी पवित्रता के हिस्सेदार बना दे।

यहून्ना ने यह कहते हुए उत्तर दिया, ''मैं पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु मुझ से शक्तिशाली एक आनेवाला ह... वह तुम्हें आग और पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देगा'' — लूका 3:16

परमेश्वर का उद्धेश्य : रोमियों 8:28—29

और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं, क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हे पहले से ठहराया भी है कि उसे पुत्र के स्वरूप में हो ताकि वह बहुत भाईयों में पहलौठा ठहरे।

बस ..... **उद्धार** ..... ही नहीं, परन्तु ..... **पुत्रत्व** .....

(पद 29 ..... **भलाई** ..... है, पद 28 का)

हर एक विश्वासी के जीवन में परमेश्वर जांच की आग भेजता है, कि उनके प्रेम की गहराई और उस पर उनके विश्वास की सामर्थ की जांच हो सके। यदि वे जांच में सफल हो जाते हैं तो उनका विश्वास और गहरा हो जाता है और पुत्रों की नाई परिपक्व हो जाते हैं। वे सीखते हैं कि ये सब चीज़े मिलकर भलाई उत्पन्न करती हैं''।

''आग के द्वारा जांच'' में परमेश्वर का अभिप्राय

1. वह फटकता है ..... **(मती 3:12)** ..... लूका 22:31

''उसका सूप उसके हाथ में है और वह अपना खलिहान अन्य रीति से साफ करेगा और अपने गेहूं को तो खत्ते में इक्टठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं'' (मती 3:12)।

यहून्ना बपतिस्मा देने वाले ने यह घोषणा की, *''मैं तो तुम्हे पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु मुझ से शक्तिशाली एक आनेवाला है... वह तुम्हें आग और पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देगा''* — लूका 3:16

- हमने पानी के बपतिस्में और पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मे के बारे में बात कर ली है, पर यहा पर आग के साथ भी एक बपतिस्मा हैं।
- जैसे पवित्रआत्मा हमारे जीवन को भर देना चाहता है, और हमारे अस्तित्व के हर हिस्से को अपनी उपस्थिति और सामर्थ से उर्जावान बना देना चाहता है, इसलिए हमारे सारे जीवन को परखे जाने और आग के द्वारा भी जांच किए जाने की जरूरत है।
- बाइबल के बहुत सारे पदों में से एक पद में परमेश्वर ने इस काम को करने के लिए अपने लक्ष्य को रखा है — रोमियां 8:28 : ''और हम जानते हैं कि, जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्ही के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं''।
  - हम अकसर कहतें हे, ''इससे कैसे भला हो सकता है?''
    - ''मैं अपनी नौकरी खो चुका हूं, और दुसरों से मदद ले रहा हूं।''
    - ''मेरे साथ एक गन्दा व्यक्ति काम कर रहा है।''
  - पद 28 की ''भलाई'' पद 29 में मिलती है : *''क्योंकि जिन्होंने उसे पहले से जान लिया है उन्हे पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाईयों में पहलौठा ठहरे।''*
  - भलाई यह नहीं हैं कि हमारे लिए सब कुछ भला होता जाएगा, यह नहीं कि हम अपने रास्तो पर चलें, यह नहीं कि जब भी हम प्रार्थना करें, जो कुछ हम चाहते है उसे यीशु हमारे लिए करे, यह नहीं कि हमारी राहें आसान हों। भलाई इन सबसे बढ़कर है.. भलाई यह है कि हम यीशु के समान बन जाते हैं । बाइबल का किंग जेम्स अनुवाद यह कहता है कि, ''... हम पुत्र की समानता में बदलते जाते हैं''

- परमेश्वर का उद्धेश्य उद्धार ही नहीं परन्तु पुत्रत्व है!

  - आग के द्वारा जांच वह रास्ता है जिसके द्वारा परमेश्वर हममें अपने पुत्र की समानता पैदा करता है ताकि हम उसके लिए अनन्त महिमा ले आएं। इस रास्ते का लक्ष्य हमें आग के द्वारा ले जाता है।

आओं आग के द्वारा जांच के लिए पवित्रशास्त्र मे प्रकाशित 6 मुख्य उद्धेश्यों को देखें।

1. वह हमें फटकता है —(मती 3:12) और लूका 22:31 *''उसका सूप उसके हाथ में है और वह अपना खलिहान अन्य रीति से साफ करेगा और अपने गेहूं को तो खत्ते में इक्ट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं''*।
   - परमेश्वर हमे तब तक फटकता है जब तक भुसा पुरी तरह से अलग नहीं हो जाती और हमारे जीवन शुद्ध नहीं हो जाता।
   - फटकने की इस प्रक्रिया में, बालीयों को इक्ट्ठा कर लिया जाता है और उन्हे सख्त फर्श पर डाल दिया जाता है, तब बैल बालीयों को दलते हैं या लोग उस पर चलते हैं ताकि इसके छिलके टुटकर अलग हो जाएं और गेहुं दिखाई देने लगे। जिस दिन हवा बह रही होती है, वे इसे छाज में ले जाते हैं और ऊपर उठाकर हवा में उड़ाते हैं। बहती हुई हवा हल्के भूसे को उड़ा देती हैं और भारी आनाज धरती पर गिर जाता है।
   - परमेश्वर अपने आनाज को पुरा का पुरा साफ करेगा। यह कोई मूल्य नहीं रखता कि परमेश्वर इसे हमारे जीवन मे कहां से आरम्भ करेगा क्योकि वह सारे के सारे छाज को ऊपर उठाएगा ताकि हमारे जीवन से सारी भूसी निकल जाए।

1. उसकी **भूख** ..... (इच्छा) की संतुष्टी करने के द्वारा

2. **प्रदर्शनी** ..... (धमण्ड) का तमाशा बनाकर

3. **पीड़ामय** ..... (तर्कवाद) रास्तो से बचाव

''आग के द्वारा जांच की परिभाषा —

परमेश्वर के द्वारा अलग करने की प्रकिया जांच, कलेश, आर्थिक समस्या और सताव के द्वारा है, जिससे हम परिपक्वता मे आ जाऐं और हमें उसकी सेवा के लिए एक तरफ रख दे और उसकी पवित्रता के हिस्सेदार बना दे।

यहून्ना ने यह कहते हुए उत्तर दिया, ''मैं पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु मुझ से शक्तिशाली एक आनेवाला ह... वह तुम्हें आग और पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देगा'' — लूका 3:16

परमेश्वर का उद्धेश्य : रोमियों 8:28—29

और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं, क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हे पहले से ठहराया भी है कि उसे पुत्र के स्वरूप में हो ताकि वह बहुत भाईयों में पहलौठा ठहरे।

बस **उद्धार** ..... ही नहीं, परन्तु **पुत्रत्व** .....

(पद 29 **भलाई** ..... है, पद 28 का)

हर एक विश्वासी के जीवन में परमेश्वर जांच की आग भेजता है, कि उनके प्रेम की गहराई और उस पर उनके विश्वास की सामर्थ की जांच हो सके। यदि वे जांच में सफल हो जाते हैं तो उनका विश्वास और गहरा हो जाता है और पुत्रों की नाई परिपक्व हो जाते हैं। वे सीखते हैं कि ये सब चीज़े मिलकर भलाई उत्पन्न करती हैं''।

''आग के द्वारा जांच'' में परमेश्वर का अभिप्राय

1. वह फटकता है **(मती 3:12)** ..... लूका 22:31

''उसका सूप उसके हाथ में है और वह अपना खलिहान अन्य रीति से साफ करेगा और अपने गेहूं को तो खत्ते में इक्टठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं'' (मती 3:12)।

परमेश्वर आग के द्वारा जांच को इसलिए भी प्रयोग करता है कि हमारी वास्तविकता को उजागर करे कि हम वास्तव में **<u>कौन</u>** और **<u>क्या</u>** है।

- जांच के प्रति हमारी प्रतिक्रिया यह दिखती है कि हमारे अस्तित्व के केन्द्र मे असल मे क्या चल रहा है और हम किस दिशा की ओर जाने की चाहत रखते हैं।
- कई बार आप परमेश्वर के लोगो ओर इस संसार में रहने वाले लोगों में किसी भी तरह की भिन्नता नहीं बतला सकते।
- यीशु ने कहा कि दो रास्ते हैं – बड़ा रास्ता जो नाश की ओर ले जाता है और संकरा रास्ता जो जीवन की ओर ले जाता है। हममें से कुछ लोग बाड़े को तोड़ने की कोशिश करते हैं और दोनों रास्तों पर चलते हैं।
- जब इस्राएल की सन्तान मिस्र से बाहर निकल आई, उन्होनें लाल सागर पार किया और फिरौन की सेना डूब गई थी, तो बाइबल हमें बताती हैं कि मिस्र से एक ''मिली जुली भीड़'' निकल कर आई थी। सभी इस्राएली नहीं थे, सबने परमेश्वर में विश्वास नही किया था। सब परमेश्वर की आराधना के लिए समर्पित नही थे। सभी परमेश्वर की आवाज नही सुन रहे थे।
- जब एक बार उन्होंने समुद्र पार कर लिया, वे सभी आनन्द मना रहे, और गा रहे, और नाच रहे थे। पर तीन दिन के बाद वे कुड़कुड़ा रहे थे और शिकायत कर रहे थे। उनका पानी खत्म हो गया था। कुछ तो वापस जाने के लिए तैयार थे। केवल तीन ही दिन तो हुए थे। कुछ तो मूसा और हारून को मारने के लिए तैयार थे। वे एक मिली जुली भीड़ थे! बार–2, समूह के हठी, विद्रोही लोग परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के विरोध मे उकसा देते थे। आग के द्वारा जांच मिली जुली भीड को हमारे जीवनो से हटा देती है... यह हमारे व्यवहारो और बर्तावो को उजागर कर देती है जिसे परमेश्वर हटाना चाहता है।
- मती 13:20 –21 में यीशु ने बीज का एक उदाहरण दिया है जो विभिन्न तरह की भुमि पर बोया गया था। पत्थरीली भूमि को ये पद ऐसे व्याख्या करते हैं, *''और जो पत्थरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुन कर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है। पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है और जब वचन के कारण कलैश या उपद्रव होता है तो तुरन्त ठोकर खाता है।''* ऐसा नहीं था कि ये लोग सुसमाचार के प्रति कठोर थे क्योंकि उन्होने आनन्द के साथ ग्रहण किया था। परन्तु यह केवल थोड़े ही दिन तक उनमे जिन्दा रहा क्योंकि उनके दिलों में उसने गहरी जड़े नही पकडी थी।
- यीशु कुछ गर्माहट को आने देता है क्योंकि यह गर्माहट हमारे दिलों की वास्तविकता को उजागर करती हैं यदि यह केवल भावनात्मक अनुभव है, या फिर कोई ऐसी बात जिसे हम करने की कोशिश कर रहे हैं, या कोई ऐसी बात जो दूसरे कर रहे हैं – यदि हमने वास्तव मे अपने जीवन का प्रभु नहीं बनाया – तो इसे गिरने में ज्यादा समय नहीं लगेगा जब जांच या सताव आएंगे

परमेश्वर हमें फटकता है, जब तक कि पूर्ण रीति से भूसा न निकल जाए और हमारा जीवन साफ न हो जाए।

वह उजागर करता है कि वास्तव .....**''कौन''**..... और .....**''क्या''**.....हैं।

जांच के प्रति हमारी प्रतिक्रिया इस परिणाम को लेकर आती है कि हम हमारे अस्तित्व के केन्द्र में वास्तव में क्या हैं और किस दिशा की ओर हम जाना चाह रहे है – (मती 7:13–14)

उदाहरण : मिली जुली भीड़

– यदि हम जांच के कारण .....**अप्रसन्न**.....हो जांए तो हमारे जीवन के कई क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

जो पथरीली भूमि पर बोया गया... अपने जड़ न पकड़ने के कारण थोड़े दिन का है जब कलेश और उपद्रव होता है तो तुरन्त वचन के कारण ठोकर खाता है।

– यदि हम जांच जाने मे .....**विद्रोह**..... करें तो हम पीछे हट जाऐगें।

मती 13:20–21

यहून्ना 15:6

यदि कोई मुझमें बना न रहे तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता है और सूख जाता है और लोग उन्हें बटोर कर आग मे झोंक दते हैं और वे जल जाते हैं।

2 पतरस 2:20–22

और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकलें और फिर उनमें फंस कर हार गए तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बुरी हो गई है क्योंकि धर्म के मार्ग का जानना ही उनके लिए इससे भला होता है कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गई थी उन पर वह कहावत ठीक बैठती हैं कि कुत्ता अपनी छांट की ओर, धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लौटने के लिए चली जाती है।

याकूब 4:19–20

''हे मेरे भाईयों यदि तुम में से कोई सत्य के मार्ग में से भटक जाए तो कोई उसको फेर लाए तो वह जान ले कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा वह एक प्राण को मृत्यु से बचा रखेगा और अनेक पापों पर पर्दा डालेगा''।

वह शुद्ध करता है – इब्रानियों 12:5–11

– विद्रोही दबा लिए गए और जीवन .....**पुनःनिर्देशित**..... किया गया हैं।

– .....**सम्बन्धित**..... होने का भाव हममें उंडेल गया है

० जब हमारी जांच होती और हम उजागर हेाते हैं तो हमारे साथ कुछ घटता है।

- यदि हम जांच के साथ **अप्रसन्न** हो जाए तो यह दिखाता है कि हमारे जीवन में कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका समाधान किया जाना है। यह हमारी चरित्र की कमजोरी की तरफ, उस स्वार्थ के प्रति जिसने हमें पूरी तरह नहीं जकड़ा ध्यान खींचती हैं। यदि हम अप्रसन्न ही बने रहेगे तो हम **विद्रोह** करेंगे ओर पीछे हट जाएंगे।
- यदि हम पाते हैं कि हम अप्रसन्न ही हैं, तब हमारे प्रत्युतर विशेष भूमिका अदा करता है। या तो हम परमेश्वर से मदद के लिए चिल्ला उठेगें, कि उजागर की गई बात का समाधान करने में हमारी मदद करे, या हम विद्रोह करेगें। यदि हम विद्रोह करेगे तो हम पीछे हट जाएगें।

० हम पवित्रशास्त्र के तीन सामर्थशाली पदों को देखने जा रहे है जो हम चेतावनी के रूप में दिए गए हैं:

- यहून्ना 15:6 *''यदि कोई मुझमें बना न रहे तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता है और सूख जाता है और लोग उन्हें बटोर कर आग मे झोंक देते हैं और वे जल जाते हैं।''* परमेश्वर का काम हमारे जीवन के अन्त में आ जाता है। क्योंकि दाखरस का फल और जीवन अब हममें और नही बह रहा इसलिए हम सूख जाते हैं और भाड़ मे झोंक दिए जाते हैं और जल जाते हैं।
- 2 पतरस 2:20—22 *''और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकलें और फिर उनमें फंस कर हार गए तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बुरी हो गई है क्योंकि धर्म के मार्ग का जानना ही उनके लिए इससे भला होता है कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गई थी उन पर वह कहावत ठीक बैठती हैं कि कुत्ता अपनी छांट की ओर, धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लौटने के लिए चली जाती है।''*
  - एक कहावत है जो कुत्ते का वापस अपनी छांट की ओर और धोंई हूई सुअरनी का कीचड़ की ओर लौटने की बात करती हैं हम ऐसा ही करते है जब हम परमेश्वर की ओर से, ''पीछे हट जाते है'', उससे जो उसने हमारे लिए किया है और फिर से संसार की वस्तुओ के साथ चिपक जाते हैं।
  - कुंजी शब्द यहां पर, ''पीछे हट जाते हैं' परमेश्वर कभी भी हमसे पीछे नही हटता परन्तु यदि हम जाच के स्थान पर विद्रोह कर देगें, तो इसका अर्थ यही होगा कि हम परमेश्वर से पीछे हट रहे हैं जबकि परमेश्वर कभी भी भुलाया नही जा सकता। इस बात को हल्का नही लेना चाहिए।
  - परमेश्वर ने हमें रोबोट नही बनाया है, परन्तु उसने हमें आजाद इच्छा दी हें और हमारे पास उससे पीछे हटने की योग्यता है, यहां तक कि हम उससे कह सकते हें कि वह हमारे जीवन से निकल जाए।
- याकूब 4:19—20 (पढ़ें)... यह चेतावनी और उत्साह दोनो हैं। यह ये दिखाता है कि एक पीछे हटने वाला का अन्त नरक होता हैं (मुत्यु से प्राण बचाए गए)। परन्तु यह ये भी साफ दिखाता है कि एक पीछे हटा हुआ पुनः स्थापित भी हो सकता है।
- आप में से कुछ आग की गर्मी को महसुस कर रहे हैं। आप इसे कैसे ले रहे हैं क्या आप अप्रसन्न हो गए हैं? क्या ऐसी कोई बात है जिसका आपको इलाज करने की जरूरत है जो उजागर हो गई है इसलिए आप परमेश्वर के सामने रोना चाहते हैं, उसे साफ करने दें, सामर्थी बनाने दे, पुनः निर्देशन देने दें और उसके जीवन को इन क्षेत्रों मे उड़ेंल लें?

आग के द्वारा जांच का एक और कारण यह है कि परमेश्वर इसके द्वारा हमें शुद्ध करता हैं वह हमें शुद्ध करता या सुधारता है ताकि हमारा विद्रोह टूट जाए और हमारे जीवन उसके उद्धेश्यों के अनुसार पुनः निर्देशित हो सकें।

- ० परमेश्वर हमें अपने दिल में प्रतिशोध रखकर कोई सजा नही देता। वह ऐसा पिता नहीं है जो अपने धीरज के अन्तिम अंक तक पहुच गया है और अब हम पर अपने गुस्से को दिखा रहा हैं। परमेश्वर हमेशा हमें **पुनःनिर्देशित** करने के लिए ढुंढ रहा है।
- ० जैसे एक पिता अपने बच्चे को खतरे में पड़ने से सुरक्षा प्रदान करने के लिए सुधारता है, परमेश्वर भी हमांरी भलाई के लिए हमें उन चार दीवारीयां में जाने के लिए पुनः निर्देशित करते हुए सुधारता है।
- ० सुधारने के द्वारा **सम्बन्धित** होने का भाव हममें उंडेल गया है।

परमेश्वर हमें फटकता है, जब तक कि पूर्ण रीति से भूसा न निकल जाए और हमारा जीवन साफ न हो जाए।

वह उजागर करता है कि वास्तव .....**''कौन''**..... और .....**''क्या''**.....हैं।

जांच के प्रति हमारी प्रतिक्रिया इस परिणाम को लेकर आती है कि हम हमारे अस्तित्व के केन्द्र में वास्तव में क्या हैं और किस दिशा की ओर हम जाना चाह रहे है – (मती 7:13–14)

उदाहरण : मिली जुली भीड़

– यदि हम जांच के कारण .....**अप्रसन्न**.....हो जांए तो हमारे जीवन के कई क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

जो पथरीली भूमि पर बोया गया... अपने जड़ न पकड़ने के कारण थोड़े दिन का है जब कलेश और उपद्रव होता है तो तुरन्त वचन के कारण ठोकर खाता है।

– यदि हम जांच जाने मे .....**विद्रोह**..... करें तो हम पीछे हट जाऐगें।

मती 13:20–21

यहून्ना 15:6

यदि कोई मुझमें बना न रहे तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता है और सूख जाता है और लोग उन्हें बटोर कर आग मे झोंक दते हैं और वे जल जाते हैं।

2 पतरस 2:20–22

और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकलें और फिर उनमें फंस कर हार गए तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बुरी हो गई है क्योंकि धर्म के मार्ग का जानना ही उनके लिए इससे भला होता है कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गई थी उन पर वह कहावत ठीक बैठती हैं कि कुत्ता अपनी छांट की ओर, धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लौटने के लिए चली जाती है।

याकूब 4:19–20

''हे मेरे भाईयों यदि तुम में से कोई सत्य के मार्ग में से भटक जाए तो कोई उसको फेर लाए तो वह जान ले कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा वह एक प्राण को मृत्यु से बचा रखेगा और अनेक पापों पर पर्दा डालेगा''।

वह शुद्ध करता है – इब्रानियों 12:5–11

– विद्रोही दबा लिए गए और जीवन .....**पुनःनिर्देशित**..... किया गया हैं।

– .....**सम्बन्धित**..... होने का भाव हममें उंडेल गया है

- बाइबल कहती है, यदि हम परमेश्वर की संतान है तो वह हमें अनुशासन में लाएगा, क्योंकि हम उसके बच्चे हैं बिल्कुल वैसे ही जैसे हमारे संसारिक माता–पिता हमें अनुशासित करते हैं। इब्रानियों 12:5–11 स्पष्ट बताता है कि, बच्चे वास्तव में प्रेम भरे अनुशासन के अन्दर सुरक्षित बन जाते है। यदि एक बच्चे को अनुशासित नही किया गया है तो, वे इस बात पर आश्चर्य करेंगे कि क्या वे ऐसे बच्चें है जिन्हें प्यार किया गया है।

- परमेश्वर का सुधार हमेशा सही होता है। यह हमेशा हमारी भलाई के लिए होता है, और यह हममे उसकी पवित्रता और चरित्र पैदा करता है।

आग के द्वारा जांच का चौथा उद्धेश्य यह है कि, वह हमारे सर्म्पण की वास्तविकता और आग के द्वारा जांच किए जाने पर हमारे प्रेम भरे प्रत्युतर को जो उसके लिए है के बारे में गवाही देता है।

- **<u>लुका 6:22–23</u>** में यीशु ने कहा कि कोई जब तुम्हे नीचा दिखाए या तुम्हे बाहर निकाल दे तो हर समय अपने आपको धन्य समझना, हर बार जब भी कोई मेरे कारण तुम पर नालिश करता है या बेइज्ज्ती करता है तो अपने आपको धन्य समझों! परमेश्वर हमे देखता है और हमारी प्रतिक्रिया पर आनन्दित होता है।

- हैरान न हों, **<u>1 पतरस 4:12–16</u>** में पतरस कहता है (पढ़ें)

  - मसीह के लिए सताया जाना आदर की बात है।
  - यह हमारे गलत व्यवहार के कारण नही होना चाहिए।
  - वह कहता है कि यह कोई अजीब बात नही हैं, यह हर समय होती रहेगी।

पद 5—7 बच्चों को वास्तव में अनुशासन के आधीन सुरक्षित बना दिया।

और तुम उस उपदेश को जो तुमको पुत्रों की नाईं दिया जाता है, भूल गए होः हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़। क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है। तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हे पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?

पद 8 *बिना अनुशासन के हम वास्तव में परमेश्वर की सन्तान नहीं बन सकते। यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे।*

पद 9—11 परमेश्वर का सुधार ही ठीक है — और हमारी भलाई के लिए है।

फिर जबकि हमारे शारिरीक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, और हमने उनका आदर किया, तो क्यों आत्माओं के पिता के और भी आधीन न हों जिससे हम जीवित रहें। वे तो अपनी—अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाए। और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द ही की नहीं पर शोक ही की दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते—सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

वह गवाही देता है — हमारे समर्पण की वास्तविकता और प्रेम के द्वारा दुःख सहना।

लूका 6:22—23 ..... (मती 5:44 और रोमियों 12:14)

1पतरस 4:12—16

हे प्रियो, जो दुःख रूपी अग्नि तुम्हें परखने के लिए तुम पर भड़की है इससे यह समझ कर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है, पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मग्न हो, फिर यदि मसीह के नाम के लिए तुम्हारी निन्दा की जाती है तो तुम धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है।

० कोरी टेन बूम की पुस्तक ''टरैम्प फार द लॉर्ड'' में एक बड़ा अच्छा उदाहरण कहानी के रूप में दिया गया है... कहानी अफ्रीका महाद्वीप मे घटी है।

— थामस एक लम्बा काला पुरूष था, जो अफ्रीका के बीच में अपनी एक गोल झोपड़ी में अपने बड़े परिवार के साथ रहता था। वह प्रभु को और लोगों को प्रेम करता था — एक अदभुत संयोग की बात।

— थामस का पड़ोसी सड़क के अगले किनारे पर रहता था, वह परमेश्वर से घृणा करता था। और थामस जैसे लोगों से जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं से भी घृणा करता था। उसकी घृणा बढ़ती चली गई यहां तक कि वह आदमी रात के समय बाहर निकलता और थामस की झोपड़ी की पराली को आग लगा देता था। उसके छोटे बच्चों को खतरे मे डाल देता था। लगातार तीन रात ऐसा होता रहा और हर समय थामस भागकर झोंपड़ी से बाहर आ जाता और आग की लपटो को बुझा देता था, इससे पहले कि वे छत और दीवारों को नाश कर दे। इस पर भी उसने अपने पडौसी को काई भी कठोर शब्द नहीं कहा, केवल अपना प्रेम और क्षमा को दिखाता रहा। जिसके कारण उसका पड़ोसी उससे और अधिक घृणा करने लगा।

— एक रात उसका पड़ौसी फिर से सडक पर आ गया और उसने थामस के घर को आग लगा दी। इस रात तेज हवा आई और थामस आग को नहीं बुझा पाया। आग की लपटें इतनी तेज थी कि सडक के दुसरी तरफ बने पड़ोसी के घर को भी आग लग गई। थामस ने अपनी छत से आग को बुझाया और सड़क की दुसरी ओर दौड़ गया, ताकि अपने पड़ोसी के कमरे की आग को बुझा सके। वह लपटों को तो बुझा पाया, पर इस प्रक्रिया में उसके हाथ और हथेलीयां बुरी तरह जल गई।

— दुसरे पड़ोसीयों ने जो कुछ हुआ था, को कबीले के सरदार को बता दिया। सरदार बहुत ही गुस्से में था, उसने थामस के पड़ोसी को पकड़ने के लिए पुलिस भेज दी और उसे कैदखाने मे डाल दिया।

— उस रात थामस उस सभा में आया जहां मैं प्रचार कर रहा था (जैसा कि वह हर रात को आ रहा था)। मैंनें उसके जले हुए हाथों पर ध्यान दिया और उससे पुछा कि क्या हुआ है। ना चाहते हुए भी उसने मुझे कहानी बताई।

— ''यह अच्छा हुआ कि वह व्यक्ति कैद में है'', मैंने कहा, ''अब से तुम्हारे बच्चे खतरे में नहीं हैं और वह अब फिर से तुम्हारे घर को आग लगाने की कोशिश नही करेगा।'' ''यह सच है'' उसने कहा, ''परन्तु मुझे दुख है, क्योंकि वह व्यक्ति अदभुत रीति से वरदान पाया हुआ व्यक्ति है, और अब उसे कैद में उन भयानक अपराधीयों के साथ में रहना होगा।'' ''तब तो आओं हम उसके लिए प्रार्थना करें'' मैंने कहा।

— थामस अपने घुटनों पर झुक गया और उसने अपने जले हुए और पट्टी बांधे हुए हाथों को जोड़ लिया और प्रार्थना करने लगा। ''प्रभु, मैं अपने पड़ोसी को तुझसे मांगने का दावा करता हूं प्रभु, उसे उसकी आजादी दे और ऐसा आश्चर्यकर्म कर कि वह और मैं एक दल के रूप में हमारे कबीले को सुसमाचार दे सके। आमीन!'' मैंने कभी भी ऐसी प्रार्थना को नहीं सुना था।

— दो दिन के बाद मुझे कैदखाने में जाने का अवसर मिला। मैने कैदियों को परमेश्वर के प्रेम और आनन्द के बारे में बताया। कैदियों के उस सुनने वाले समूह में थामस का पड़ोसी भी सुन रहा था। जब मैंने कहा कि कौन यीशु को अपने दिल मे ग्रहण करेगा तो, उस व्यक्ति ने सबसे पहले अपने हाथ को खड़ा किया।

— सभा के बाद मैंने उससे कहा कि कैसे थामस उससे प्रेम करता है, कैसे उसने अपने हाथों को अपना घर बचाने की कोशिश में जला लिया और कैसे उसने प्रार्थना की, कि वे एक दल के रूप में सुसमाचार को फैला दें। वह पुरूष बड़े–2 आंसुओं के साथ रोया और अपना सिर हिलाते हुए कहने लगा, ''हां, हां, यह ऐसा ही होना चाहिए!''

— अगले दिन मैंने थामस को बता दिया। उसने परमेश्वर की स्तुति की और कहा, ''आप देखें, परमेश्वर ने एक आश्चर्यकर्म किया है। हम इससे बढ़कर उससे और क्या आशा रखें।'' वह अपने रास्तें पर वापस दौड़ते हुए चला गया उसका चेहरा आनन्द से चमक रहा था।

— क्या थामस के जीवन में कुछ ऐसा चल रहा था, जिसके कारण परमेयवर ने इस भयानक घटना को घटने दिया? नहीं, परमेश्वर उसके पड़ौसी की जांच के द्वारा अपने लिए एक गवाह को स्थापित कर रहा था।

० पौलुस ने परमेश्वर से तीन बार प्रार्थना की कि उसके शरीर से कांटा हटा दिया जाए और परमेश्वर ने कहा नहीं, क्योंकि उसकी सामर्थ **कमजोर** लोगों में शक्ति के साथ दिखाई देती है। पौलुस अपने ''कमजोर'' होने की बात पर घमण्ड करता है। इस बात को वह 2कुरिन्थियों 12:9 मे लिखता है। जब मैं कमजोर होता हूं, और हरेक जानता है, यदि कोई अच्छी घटना घट जाती है तब वे जानते है कि यह परमेश्वर है, मैं नही और वह महिमा पाता है।

उदाहरण – ''थोमा पट्टी से बन्धे हुए हाथों के साथ''।

2 कुरिन्थियों 12:9– परमेश्वर की सामर्थ .....**कमजोर**..... लोगों में उत्तमता के साथ दिखाई देती है

इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओ पर धमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे।

वह परिपक्व करता है

जांच हमारे लिए परमेश्वर का हथियार .....**सिद्ध**..... और .....**पूरा**..... करने के लिए है।

इब्रानियों 5:8–9 (लूका 12:50)

और पुत्र होने पर भी उसने दुःख उठाकर उसने आज्ञा मानना सीखा और सिद्ध बन कर अपने सब आज्ञा मानने वालों के उद्धार का कारण हो गया।

याकूब 1:2–4

हे भाईयों जब तुम नाना प्रकार की परिक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो यह जान कर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है, पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे।

परमेश्वर हमें उस समय तक शक्तिशाली वरदान नहीं देता जब तक कि उसे लेने के लायक न हो जाए।

1 थिस्लुनीकियों 2:3–5

क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से और न अशुद्धता से और न छल के साथ है पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहरा कर सुसमाचार सौंपा... क्योंकि तुम जानते हो कि न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे और न लोभ के लिए बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है।

आग के द्वारा जांच का अन्य उद्धेश्य हमें परिपक्व करने से है। अकसर परमेश्वर हमें **<u>परिपक्व</u>** और **<u>पूरा</u>** करने के लिए जांचों को हथियार के रूप में प्रयोग करता है।

- यीशु स्वंय भी उन बातों के द्वारा परिपक्व बना जो उसने सहीं (इब्रानियों 5:8—9)।

- याकूब 1:2—4 ''यदि आपका जीवन समस्याओं और परिक्षाओं से भरा हुआ है तब आनन्दित हो जाएं'' क्यों? क्योंकि जब ऊबड़—खाबड रास्तों पर हम चलते हैं, तब हमारा घीरज बढ़ता है, और हम ऐसे विश्वासी के रूप में विकसित हो जाएगें, जो कुछ भी सहनें के लिए तैयार हैं चरित्र में मजबुत हैं भरे हुए और पूरे है।

- हम समस्याओं और परिक्षाओं से साधारणतया भागने की कोशिश करते हैं। याकुब हमें उत्साहित करता है कि हमे इन बातों मे परमेश्वर के हाथ को देखना चाहिए और हमें जांच में से जाना चाहिए ताकि हम सिद्ध बन सकें।

- परमेश्वर के पास हममें और हमारे जीवन के द्वारा बहुत कुछ स्थापित करना है परन्तु वह कुछ नहीं कर सकता जब तक हम परिपक्व नही बन जाते।

  - अन्यथा यह 2—3 साल के बच्चे को रोटी बनाने के लिए कहने जैसा होगा। या बच्चे के हाथ में पिस्तौल देने के जैसा होगा।

- परमेश्वर के पास हमारे जीवनों के लिए अविश्वसनीय सामर्थ, वरदान और उद्धेश्य हैं। परन्तु बहुत से पुरे नहीं होते जब तक हम परिपक्व न हो जाएं।

  - 1 थिस्लुनीकियों 2:3—5 *''क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से और न अशुद्धता से और न छल के साथ है पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहरा कर सुसमाचार सौंपा... क्योंकि तुम जानते हो कि न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे और न लोभ के लिए बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है''*।

उदाहरण – ''थोमा पट्टी से बन्धे हुए हाथों के साथ''।

2 कुरिन्थियों 12:9– परमेश्वर की सामर्थ .....**कमजोर**..... लोगों में उत्तमता के साथ दिखाई देती है

इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओ पर धमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे।

वह परिपक्व करता है

जांच हमारे लिए परमेश्वर का हथियार .....**सिद्ध**..... और .....**पूरा**..... करने के लिए है।

इब्रानियों 5:8–9 (लूका 12:50)

और पुत्र होने पर भी उसने दुःख उठाकर उसने आज्ञा मानना सीखा और सिद्ध बन कर अपने सब आज्ञा मानने वालों के उद्धार का कारण हो गया।

याकूब 1:2–4

हे भाईयों जब तुम नाना प्रकार की परिक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो यह जान कर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है, पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे।

परमेश्वर हमें उस समय तक शक्तिशाली वरदान नहीं देता जब तक कि उसे लेने के लायक न हो जाए।

1 थिस्लुनीकियों 2:3–5

क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से और न अशुद्धता से और न छल के साथ है पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहरा कर सुसमाचार सौंपा... क्योंकि तुम जानते हो कि न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे और न लोभ के लिए बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है।

- आग के द्वारा जांच का अन्तिम उद्धेश्य जिसे हम देखने जा रहे हें वह यह है कि परमेश्वर हमें शुद्ध करता है।

  - हमारे जीवन से **<u>अशुद्धताओं</u>** को हटा दिया जाता है।
  - मलाकी 3 यीशु को अपने अधिकार पुर्ण स्थान को लेने और अपने लोगों करे बहुमूल्य घातु के समान शुद्ध करने और उनके पीले पड़े कपड़ो को सफेद और पवित्र करने के लिए आग की लपटों के समान साथ आते हुए की तस्वीर है। *''सुनार के समान जो बैठता और देखता है जब तक घातु की मैल दूर न हो जाए। वह लेवियों को शुद्ध करेगा। जो परमेश्वर की सेवा करते है, उन्हें चांदी और सोने क समान शुद्ध करेगा ताकि वे परमेश्वर का काम अपने शुद्ध मन से करें।''*

  - मलाकी के दिनों में एक बड़े घड़े में कच्ची घातु भर कर आग पर रख दी जाती थी। और घातु पिघलना शुरू करती थी। तब शुद्ध करने वाला व्यक्ति बैठा हुआ देखता रहता था, क्योंकि एक निशचित तापमान पर घातु की मैल घातु को छोड़ देती थी। घातु की अशुद्धता ऊपर तैरने लगती थी और सुनार इसको ऊपर से इक्टठा करके फेंक देता था। आग को भड़का दिया जाता था, अधिक अशुद्धता ऊपर आ जाती थी और उसे फेंक दिया जात था। आग को और अधिक भड़का दिया जाता था और अशुद्धता ऊपर आ जाती थी और उसे फेक दिया जाता था। क्या आप जानते हैं कि वे कैसे इस बात का पता लगाते थे कि शुद्धता की प्रकिया पुरी हो गई है? जब घातु इतनी शुद्ध और साफ हो जाती थी तो सुनार अपनी प्रतिबिम्ब को घातु मे देख सकता था।

  - क्या आप यीशु को अपने जीवन में प्रेम पूर्ण काम करते हुए, अशुद्धताओ को जलाते हुए और हमें एक ऐसे अहोदे पर लाते हुए जहां हमारे जीवन उसकी महिमा करेगें हुए, देखते हैं। और वह हममें क्या देख रहा है? रोमियों 8:29 की ''भलाई'' को याद रखें... कि हम उसे जैसे बन जाएगें! यीशु मसीह हमारे जीवन मे सुनार की तरह क्या देख रहा है : हममें अपनी प्रतिबिम्ब। इसलिए वह हमारे जीवन में आग को भड़का रहा है और स्वार्थपन उपर आ जाता है। भलाई। वह कड़छी को लेता है और ऊपर से मैल को हटा कर फेक देता है। वह आग को और भड़का देता हैं ताकि कुछ और बाहर निकल आए — क्षमा न करना। वह इसे उठा लेगा और फेंक देगा। एक बार फिर वह आग भड़का देता है। एक के बाद एक, हमारे जीवन की अशुद्धताएं ऊपर आ जाती है और मसीह उन्हे हटाता जाता है। और अन्त में वह अपनी प्रतिबिम्ब को हममे देखता है। उसका हृदय आनन्द से भर जाता है।

वह शुद्ध करता है

— **अशुद्धता** ..... हटाई गई है।

मलाकी 3:1—4

वह सुनार की आग और धोबी के साबुन के समान है, वह रूपे का तालमेल और शुद्ध करने वाला बनेगा और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने रूपे की नाई निर्मल करेगा तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाऐंगे।

सुनार अपनी भट्ठी पर तब तक बैठता है, जब तक धातु में से पूरी अशुद्धता ना निकल जाए, वह पुरा साफ ना हो जाए। और सुनार स्पष्टता से चांदी और सोने में अपना प्रतिबिम्ब देख सकता है।

— जीवन ..... **पवित्र** ..... हो जाता है।

1कुरिन्थियों 3:11—15 (2कुरिन्थियों 5:10)

''क्योंकि उस नीव को छोड़ जो पड़ी है और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता और यदि इस नींव पर सोंना या चांदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है? जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते —जलते''।

''आग के द्वारा जांच'' हमें आग के न्याय के लिए तैयार करती है ताकि हमारी प्राण और आत्मा जिसने जांच को सही तरह से ले लिया है, उस दिन शुद्ध और बहुमूल्य प्रगट हो। परन्तु जो विश्वासी आग को यहां धोखा देता या विद्रोह करता है, और अपने आप को इससे बचाता हैं वह न्याय के दिन आग का अनुभव करेंगे तब उनके जीवन के कार्य जलाए जाऐंगे और उन्हें नंगा छोड़ देंगे।

— **उसकी स्तुति हो और आपकी स्तुति हो** .....

1पतरस 1:7

''और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर कारण ठहरे''।

आत्मा के बपतिस्में के बाद आग के द्वारा जांच आती है। यह परमेश्वर की योजना का हिस्सा होता है, ताकि हम उसके पुत्र की समानता में हो जांए। हाल्लेलूय्याह!

जीवन **<u>पवित्र</u>** हो जाता है — 1कुरिन्थियों 3:11—15

- हम जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते और उसे अपना उद्धारकर्ता मानते हैं, कभी भी महान श्वेत सिहांसन के न्याय का सामना नही करेगें जहां से खोई हुई आत्माओं को नरक की झील में भेजा जाएगा। हमें इस बात की चिन्ता करने की जरूरत नही है, उसकी धार्मिकता हम पर लागू की गई है, और हम बचे हुए हैं।

- परन्तु एक न्याय है, जिसका हमें सामना करना पड़ेगा, यह मसीह का न्याय है जब हम उसके सामने खड़े होगे तो हमारे कामेां का न्याय किया जाएगा। 1कुरिन्थियों 3:11—15 (पढ़ों)

- हममें से हरेक प्रतिदिन ऐसे जीवन को निर्मित कर रहा है जिसे परमेश्वर मसीह में न्याय में जांचेगा। हममें से कुछ काठ या घास या फूस के रद्दे रख रहे हैं। हम बड़े—2 कामों को कर रहे होगे, परन्तु हमारा उद्धेश्य स्वंय के लिए है। आग हमारे उद्धेश्यों की जांच करेगी। हम मनुष्यों की नजरों में कुछ ऐसा बना रहे होगे जो सुन्दर दिखता है पन्तु परमेश्वर इसे जला देगा।

- मरकुस 9 में यीशु कहता है, ''हरेक जल्दी या देर में सुनार की आग मे से होकर जाने वाला है।'' हमें परमेश्वर की शुद्ध करने वाली आग में से अपने जीवन को होकर जाने देना चाहिए, ताकि वह सब काठ को और घास या फूस को जला सके और हम परमेश्वर के लिए जो काम करते हैं वे बहुमूल्य सोने, हीरे, और चांदी के समान बन जाए।

- वहां पर साधारण लोग होंगे जो परमेश्वर के सामने खड़े होगें और परमेश्वर उनसे कहेगा, ''देखो ये अदभुत रहने का स्थान जो तुम्हारे लिए बनाया गया है!''

- जबकि दूसरे वहां पर खड़े हुए सोच रहे होगे, कि उन्होंने परमेश्वर के लिए बड़े—2 कामों को किया, परन्तु आग इन सबकी जांच करेगी, और वहां पर केवल राख रह जाएगी। पद कहता है, ''वे तो बच जांऐगे परन्तु उसके समान जो आग में से निकलकर गया हो''। सब कुछ चला जाएगा। उन्होने अपना सारा जीवन आग से बचने में लगा दिया और जो उन्हें शुद्ध करती। जो उनके जीवन में अच्छी चांदी और सोने को पैदा करती। उन्होंने परमेश्वर का काम नहीं करने दिया। अब वे यहां पर है केवल आग की गर्मी के साथ।

- बाइबल कहती है, कि परमेश्वर सारे आंसुओं को मिटा देगा। उनमें से कुछ आंसु शायद उन लोगों के होगे, जिनके जीवन के काम न्याय की आग में जलकर खत्म हो गए हैं, और अब उनके पास उद्धारकर्ता की भेट के लिए कुछ भी नहीं है।

वह शुद्ध करता है

– **अशुद्धता** ..... हटाई गई है।

मलाकी 3:1–4

वह सुनार की आग और धोबी के साबुन के समान है, वह रूपे का तालमेल और शुद्ध करने वाला बनेगा और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने रूपे की नाई निर्मल करेगा तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाऐंगे।

सुनार अपनी भट्ठी पर तब तक बैठता है, जब तक धातु में से पूरी अशुद्धता ना निकल जाए, वह पुरा साफ ना हो जाए। और सुनार स्पष्टता से चांदी और सोने में अपना प्रतिबिम्ब देख सकता है।

– जीवन **पवित्र** ..... हो जाता है।

1कुरिन्थियों 3:11–15 (2कुरिन्थियों 5:10)

''क्योंकि उस नीव को छोड़ जो पड़ी है और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता और यदि इस नींव पर सोंना या चांदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है? जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते –जलते''।

''आग के द्वारा जांच'' हमें आग के न्याय के लिए तैयार करती है ताकि हमारी प्राण और आत्मा जिसने जांच को सही तरह से ले लिया है, उस दिन शुद्ध और बहुमूल्य प्रगट हो। परन्तु जो विश्वासी आग को यहां धोखा देता या विद्रोह करता है, और अपने आप को इससे बचाता हैं वह न्याय के दिन आग का अनुभव करेंगे तब उनके जीवन के कार्य जलाए जाऐंगे और उन्हें नंगा छोड़ देंगे।

– **उसकी स्तुति हो और आपकी स्तुति हो** .....

1पतरस 1:7

''और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर कारण ठहरे''।

आत्मा के बपतिस्में के बाद आग के द्वारा जांच आती है। यह परमेश्वर की योजना का हिस्सा होता है, ताकि हम उसके पुत्र की समानता में हो जांए। हाल्लेलूय्याह!

- 1 पतरस 1:7 ... *''और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर कारण ठहरे''।*

- अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका में लिखें, उसकी स्तुति हो और आपकी स्तुति हो। एक दिन आएगा जब वह सारे आदर को प्राप्त करेगा और हम उस स्तुति में अपनी स्तुति भी जोड़ेगें, जब हम अपने मुकुटों को उसके सामने डाल देंगे और उन सब बातों को जो हमारे जीवन में घटी हैं, के लिए महिमा देंगे। पर इस पद में कुछ स्तुति हमारे लिए भी है। सभी स्वर्गदुतों के सामने वह स्तुति को प्राप्त करेगा और हम स्तुति को प्राप्त करेगें।

परमेश्वर हमें इस कठिन बात को स्वीकार करने में मदद करे जो परमेश्वर की योजना का एक हिस्सा हैं, कि हमें उसके पुत्र के प्रतिबिम्ब के सदृश्य बना दे।

वह शुद्ध करता है

— **अशुद्धता** ..... हटाई गई है।

मलाकी 3:1—4

वह सुनार की आग और धोबी के साबुन के समान है, वह रूपे का तालमेल और शुद्ध करने वाला बनेगा और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने रूपे की नाई निर्मल करेगा तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाऐंगे।

सुनार अपनी भट्ठी पर तब तक बैठता है, जब तक धातु में से पूरी अशुद्धता ना निकल जाए, वह पुरा साफ ना हो जाए। और सुनार स्पष्टता से चांदी और सोने में अपना प्रतिबिम्ब देख सकता है।

— जीवन ..... **पवित्र** ..... हो जाता है।

1कुरिन्थियों 3:11—15 (2कुरिन्थियों 5:10)

''क्योंकि उस नीव को छोड़ जो पड़ी है और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता और यदि इस नींव पर सोंना या चांदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है? जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते —जलते''।

''आग के द्वारा जांच'' हमें आग के न्याय के लिए तैयार करती है ताकि हमारी प्राण और आत्मा जिसने जांच को सही तरह से ले लिया है, उस दिन शुद्ध और बहुमूल्य प्रगट हो। परन्तु जो विश्वासी आग को यहां धोखा देता या विद्रोह करता है, और अपने आप को इससे बचाता हैं वह न्याय के दिन आग का अनुभव करेंगे तब उनके जीवन के कार्य जलाए जाऐंगे और उन्हें नंगा छोड़ देंगे।

— **उसकी स्तुति हो और आपकी स्तुति हो** .....

1पतरस 1:7

''और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर कारण ठहरे''।

आत्मा के बपतिस्में के बाद आग के द्वारा जांच आती है। यह परमेश्वर की योजना का हिस्सा होता है, ताकि हम उसके पुत्र की समानता में हो जांए। हाल्लेलूय्याह!

1. क्यों यीशु पानी और आत्मा के बपतिस्मे के बाद जंगल में परीक्षा के लिए ले जाया गया? (लूका 4:1 और 4:14 की तुलना करें)।

2. मती 13:20—21 के अनुसार ''आग के द्वारा जांच'' कौन सी एक महत्वपूर्ण बात को प्रकाशित करती है?

3. कैसे ''आग के द्वारा जांच'' हमें इस बात का आश्वासन देती है कि हम वास्तव में परमेश्वर के परीवार से सम्बन्धित है? — इब्रनियों 12—9

4. पिता जब हमें अनुशासित करता है तो उसके दृष्टिकोण में अन्त क्या है? इब्रानियों 12:10—11

5. किन तरीको से ''आग के द्वारा जांच'' हमें न्याय की आग का सामना करने के लिए तैयार करने में मदद करती है? (1 कुरिन्थियों 3:11—15)

प्रथम

— पिछले सप्ताहे के प्रश्न पत्र पर चर्चा करें। शीध्रता से उत्तर बांट लें।

— तब हर एक को यहून्ना 15:1—8 में से '' भोजन खिलाने'' के अपने अनुभव बांटने दीजिए। प्रश्न पत्र को जमा कर लें। सहायक टिप्पणी दें और उन्हें इस सप्ताह के दौरान लौटा दें।

— इस ''भोजन खिलाने'' वाले परिक्षण मे जिन्हें कठिनाई हो रही हैं उन्हें प्रोत्साहित कीजिए। उन्हें दो और अभ्यास शीट कार्य करने के लिए दें। उन्हें अपनी शीट के ऊपर दाहिने कोने में दिया गया काम लिखने दीजिए।

तब (यदि समय है तो निम्न प्रश्नों के साथ आज रात्रि के अधिवेश्न पर चर्चा करें)

1. याकूब 1:2 पर समूह की प्रतिक्रिया पूछें।
2. हम अपने आप को किस खतरे में डाल देते हैं जब हम जांच में ''विद्रोह'' करते हैं?
3. विभिन्न लोगों को बताने दीजिए कि किस प्रकार परमेश्वर के द्वारा ''आग की जांच'' का प्रयोग किया जाता है :

''फटकना''	—	मत्ती 3:12 (या)
''शुद्ध करना''	—	इब्रानियों 12:5—11 (या)
''गवाह''	—	2कुरिन्थियों 12:9 (या)

अगला

— भविष्य के लिए समूह को अपने हृदय की अभिलाषाओं को बताने दीजिए

अन्त में

— एक दूसरे के लिए और एक दुसरे के साथ प्रार्थना करो, लगातार '' वार्तालापिक प्रार्थना'' का अभ्यास करते रहो।

इस सप्ताह के लिए गृह कार्य

1. हर एक से प्रश्न पत्र 9 को पूरा करने को कहें, और कहें कि अगले समूह की बैठक में अपने साथ लाए।

2. ''भोजन खिलाने'' के लिए दिए गए निम्न दो संदर्भों पर अगले सप्ताह अभ्यास करने दीजिए। 2 कुरिन्थियों 9:6—15 और 1 पतरस 1:21—22